हिन्दी साक्षरों के लिए

ढुँढाड़ी अक्षर ज्ञान पुस्तिका

हिन्दी साक्षरों के लिए ढुँढाड़ी अक्षर ज्ञान पुस्तिका
(Dhundari transition primer book for Hindi literates)

प्रथम प्रकाशन वर्ष: अगस्त-2017

प्रकाशन प्रतियाँ: 200

© निर्माण सोसायटी

द्वारा तैयार

पूरण मल बैरवा, रामजी लाल बैरवा, बजरंग लाल बैरवा,
गणेश लोदी व महेन्द्र शिर्रा

भाषा वैज्ञानिक सलाहकार

बिन्नी अब्राहम व ब्लेसी मोल बिन्नी

चित्रकार

मुकेश कुमार योगी व मुकेश कुमार जगसरा

टाईपसेटिंग

रतन लाल योगी

प्रकाशन

निर्माण सोसायटी

मस्जिद के पास, सरकारी अस्पताल के पीछे,
वार्ड नं.-19, दलालों का मोहल्ला,
चाकसू, जयपुर राजस्थान-303901
rajasthanlanguges@nirmaan.org.in
फोन नं० 01429-243997

सब अधिकार सुरक्षित हैं

प्रकाशन की अग्रिम लिखित अनुमति के बिना, इस प्रकाशन का कोई भी भाग-आण्विक रूप में, यांत्रिकी रूप में, रिकॉर्डिंग के रूप में या अन्य किसी भी रूप में या अन्य माध्यम से पुन: उत्पादित नहीं किया जा सकता, न ही पुन:प्राप्ति पद्धति में इसका भंडारण किया जा सकता है, या प्रसारित किया जा सकता है।

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों

ढुँढाड़ पुराने समय से ही बहुत धनी प्रदेश रहा है। यह राजस्थान की राजधानी है। यह न केवल अपनी विशेषता लिए हुए है बल्कि सभी शैलियो को समाहित किए हुए हैं। इसका उप नाम गुलाबी नगरी है। यहाँ बहुत से राजाओं का राज रहा है। सिकन्दर के आक्रमण के समय कच्छवाह राजपूत ग्वालियर और नरवर के जंगलों से आकर जयपुर के पास बस गये। कच्छवाह वंश के राजा दुल्हेराव ने यहाँ के शासित बड़गुर्जरों को परास्त कर 1137 ई. में ढुँढाड़ में नवीन कच्छवाह वंश राज्य की स्थापना की। इस वंश के कोकिलदेव ने 1207 ई. में मीणाओं को परास्त करके आमेर पर अपना अधिकार जमाया और उसे अपनी राजधानी बनाया। इस प्रकार ढुँढाड़ राज्य का संस्थापक दुल्हेराव 1137 ई. तथा आमेर के संस्थापक कोकिलदेव 1207 ई. था।

कच्छवाह शासक पृथ्वीराज की मृत्यु के पश्चात आमेर की स्थिति दुर्बल हो गई। 1527 ई. से 1548 ई. तक आमेर में अयोग्य शासकों के कारण गृह कलह की स्थिति बनी रही। 1527 ई. से 1533 ई. पृथ्वीराज का छोटा लड़का पूरण मल आमेर का शासक बना। इस गृह कलह का फायदा उठाते हुए पृथ्वीराज के भाई साँगा ने राव जेतसी की सहायता से साँगानेर बसाया।

ढुँढाड़ी क्षेत्र अधिक नहीं है फिर भी इस क्षेत्र को सभी जानतें हैं। ढुँढाड़ी क्षेत्र लगभग 15,50,079 वर्ग मील (40349 वर्ग किलोमीटर) है। यह क्षेत्र राजस्थान के पश्चिम दिशा के रेगिस्तान के पास है। ढुँढाड़ी क्षेत्र जयपुर, टोंक, दौसा, और अजमेर के कुछ भाग में फैला हुआ है। जो अरावली की पहाड़ियों से घिरा हुआ है। इस क्षेत्र में ढूँढ नदी के बहने के कारण इस क्षेत्र को ढुँढाड़ कहते हैं। इसमें ढूँढ नदी के साथ-साथ बनास, बाणगंगा, मोरेल, मासी, साबी, साक, डाई, व बांडी नदियां बहती है।

यहाँ पर अनेक बाँध भी बने हुए हैं, जैसे जमुवारामगढ़, बीसलपुर, मासी, गोलीराव, आदि, इनमें से बीसलपुर बाँध से अजमेर, टोंक, जयपुर जिलों को पीने के लिए पानी मिलता है।

'ढुँढाड़ी भाषा' भाषा-विज्ञान के दृष्टिकोण से उत्तम भाषा है। यह राजस्थान में बोली जाने वाली समस्त भाषाओं का मध्य केन्द्र है। भाषा एवं संस्कृति का एक ऐसा जुड़ाव है कि यह एक दूसरे से अलग नहीं हो सकती है। इस भाषा को प्राचीन समय से संरक्षण किया जा रहा है। भाषा एवं संस्कृती को अक्षुण बनाये रखने के लिए इसका संरक्षण अति आवश्यक है। अपनी भाषा (ढुँढाड़ी) दिनों-दिन लुप्त होती जा रही है। आजकल की युवा पीढ़ी इस भाषा का प्रयोग नहीं करती है। इस पुस्तक के माध्यम से लोगों के द्वारा अपनी भाषा को ओर भी बढ़ाने की कोशिश की जा रही है। ढुँढाड़ी समुदाय हिन्दी व दूसरी भाषाओं की तरफ आकर्षित हो रहा है, जिससे ढुँढाड़ी भाषा लुप्त होती जा रही है। अत: इसको मध्य नजर रखते हुए यह ढुँढाड़ी अक्षर ज्ञान पुस्तिका बनाई गई है। इस पुस्तक को प्रकाशित करने का मुख्य उद्देश्य 'ढुँढाड़ी क्षेत्र' में 'ढुँढाड़ी भाषा' के कम होते प्रयोग को बढ़ाना है।

यह पुस्तक ढुँढाड़ी बोलने वाले उन लोगों के लिए है जो पहले से हिन्दी पढ़ना व लिखना जानते हैं।

1. यह पुस्तक ढुँढाड़ी भाषा को पढ़ने एवं लिखने का तरीका सिखाती है।
2. यह पुस्तक हिन्दी व ढुँढाड़ी भाषा में अन्तर बताती है।
3. इस पुस्तक के सभी पाठों को सीखने के साथ-साथ अभ्यास के लिए भी जगह दी गई है।
4. इस पुस्तक में कुछ कहानियों का भी समावेश है, जो पढ़ने वालों के लिए बहुत रूचिकर है।
5. इस पुस्तक के सभी निर्देश हिन्दी भाषा में दिये गये हैं।
6. यह पुस्तक व्यक्तिगत या सामुहिक दोनों ही रूप से सिखाने में उपयोगी है।

7. यह पुस्तक हिन्दी भाषा की वर्णमाला के अनुसार न होकर ढुँढाड़ी भाषा में सबसे ज्यादा प्रयोग में आने वाले अक्षरों के हिसाब से बनाई गई है।
8. इस पुस्तक में 34 पाठ व 5 कहानियों को समाहित किया गया है।

निर्माण सोसायटी एक ऐसी संस्था है, जो न केवल राजस्थान में बल्कि पूरे भारत के सभी राज्य के छोटे से छोटे क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा को लिखित रूप देकर, वहाँ की भाषा संस्कृति को बचाने का कार्य कर रही है। राजस्थान में पहली बार ढुँढाड़ी भाषा को लिखने का कार्य निर्माण सोसायटी करवा रही है। यह संस्था गाँवों के बड़े बुजुर्ग लोगों को, जो पढ़े-लिखे नहीं हैं, उनको पढ़ाने का कार्य भी कर रही है। इसके अलावा यह समाज में फैली हुई बुराईयों और भ्रष्टाचार के खिलाफ व ग्राम विकास के लिए कार्य करती है।

इस पुस्तक को तैयार करने में ढुँढाड़ी समुदाय के सभी लोगों ने कहानियों को बोलकर, वर्णमाला के अनुसार शब्दों का चयन करके, उनके बारे में विस्तृत जानकारी देकर एवं जाँच करके अपना-अपना पूरा सहयोग दिया है, जिससे यह पुस्तक तैयार हुई है। इस पुस्तक में सहयोग करने वालों से निवेदन है, कि आप आगे भी निर्माण सोसायटी का इसी प्रकार सहयोग करते रहें ताकि हम, ढुँढाड़ी भाषा में नये-नये साहित्य तैयार कर सकें। हम आप सभी के आभारी हैं। इस पुस्तक में आपको जो भी कमी लगे तो आप हमें बता सकतें हैं, जिससे आगामी प्रकाशन को और बेहतर बनाया जा सकें।

निर्माण सोसायटी

ढुँढाड़ी वर्णमाला

स्वर एवं मात्रायें

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ओ	अं
	◌ा	◌ि	◌ी	◌ु	◌ू	◌े	◌ो	◌ं

व्यंजन:-

क	ख	ग	घ	
च	छ	ज	झ	
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	स
ह	ळ	ड़		

ढुँढाड़ी भाषा संयुक्ताक्षर

संयुक्ताक्षर
कर्रर, जर्रर, भर्या, भर्रर
कक्का, मक्का, क्यारी, क्यान
चुन्नी, पन्नी, कान्दा, कन्दार, न्यारा, अन्याई, अन्त, सन्त
कब्बो, डब्बो, कब्जो, लब्ज, ब्यान, ब्याई, ब्याण
जग्गो, मग्गो, ग्यान
गद्दो, भद्दो, कद्यां, जद्यां
गल्लो, बल्लो, काल्यो, मोल्यो, सुल्पी, कुल्पी, खूल्ड, उल्ट-पुल्ट
गण्डक, डण्डो, कण्ट, चण्ट, मण्यां, जाण्यां
सोळळो, पळळो, काळयो, पीळयो
कड़्यां, बांड़्यां
पत्ता, गत्ता, मोगत्यो, त्यार
सुस्सो, कस्सो, स्याळ, उस्यार, मस्त, मनमस्त
सज्जो, छज्जो, कज्या, सज्या
छ्यान, छ्याळी, छ्याच
पट्टी, गट्टी, टांट्या, साट्या
गप्पी, कुप्पी, प्याली, टोप्यां
मम्मी, खम्बो, लम्बो, म्हारो, खुम्हार, पम्प, रम्प, म्यान, म्याऊं
डुंड्यो, बांड्यो
कच्चो, कच्चर-मच्चर, बच्या, च्यार
ख्याल, आंख्यां
घ्यारी
गोफ्यो, बाफ्यो
ध्यान

ढुँढाड़ी भाषा के नियम

1. हिन्दी भाषा के ये स्वराक्षर "**ऋ, ऐ, औ, अः**" एवं व्यजंनाक्षर **"ङ, ञ, श, ष, क्ष, त्र, ज्ञ**" इन सभी अक्षरों को ढुँढाड़ी भाषा में उपयोग में नहीं लेते हैं।

2. **आंगळी, पंच, ठंड, दुंद, एवं पंप** जैसे शब्दों में आने वाले नासिक्य ध्वनियों **ङ, ञ, ण, न एवं म** मात्राओं को "ं" से दर्शाते हैं।

3. **"ँ" यह चिह्न ढुँढाड़ी भाषा में उपयोग नहीं करते हैं।** "ँ" के स्थान पर हम "ं" का ही इस्तेमाल करते हैं।

4. **[ळ]** अक्षर ढुँढाड़ी भाषा का शब्द है। यह हिन्दी भाषा में नहीं है।

5. जब **"र"** की ध्वनी अर्द्धाक्षर के रूप में प्रयोग होती है तो उसे, उसके आगे वाले अक्षर के उपर इस (र्‍) मात्रा के रूप में दर्शाते हैं। जैसे- सोर्रो, सोर्यो

6. ढुंढाड़ी भाषा में **"कर्म"** को **'करम'** लिखते हैं।

7. हिन्दी भाषा के वर्णो के नीचे प्रयोग किया जाने वाले **(क्र)** और **(कृ)** को ढुँढाड़ी भाषा में प्रयोग नहीं करते हैं।

8. **"पअड़" "लअड़"** जैसे शब्दों को बोलते समय इनकी ध्वनियों को **'ड'** से पहले **'ळ'** जैसी ध्वनि निकलती है।

9. ढुँढाड़ी भाषा के शब्दों के बीच में आने वाले **'महाप्राण'** अक्षरों जैसे **[ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ]** के स्थान पर ज्यादातर **'अल्पप्राण'** **[क, ग, च, ज, ट, ड, त, द, प, ब]** अक्षरों को ही काम में लेते हैं। जैसे:- बांधना = बांदबो (इस शब्द में **[ध]** के स्थान पर **[द]** ही काम में आया है।)

10. ढुंढाड़ी भाषा में ज्यादातर **[ह]** के स्थान पर **[अ]** को काम में लेते हैं। जैसे :- बहना = बअबो, कहना = खअबो।

ढुँढाड़ी भाषा के चिह्न :-

11.ढुँढाड़ी भाषा में निम्न चिह्नों का प्रयोग होता है।

1. अल्प विराम (,)
2. अर्ध विराम (;)
3. पूर्ण विराम (।)
4. विस्मयादिबोधक चिह्न (!)
5. प्रश्नवाचक चिह्न (?)
6. कोष्ठक ( )
7. निर्देशक चिह्न (-)
8. उद्धरण चिह्न (“ ”)
9 आदेश चिह्न (:-)

पाठ-1

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

र रा रि री रु रू रे रो रं

रीछ

रूल

रबड़
राछ
रिबन
रील
रुमाल
रूप
रेलो
रोजड़ो
रंग

"र" के साथ आने वाले संयुक्ताक्षर

र्र	कर्रर	भर्या

1. रीछ कोनअ।
2. रूल टूटगी।

र रा रि री रु रू रे रो रं

....
....

पाठ-2

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

क का कि की कु कू के को कं

कान

कीकर

कड़ाई
कागलो
किली
कील
कुई
कूड़ो
केतली
कोअड़ी
कंचळो

"क" के साथ आने वाले संयुक्ताक्षर

क्क	कक्का	मक्का
क्य	क्यारी	क्यान

1. कान मअ लागी।
2. कीकर कन कूड़ो छ।

क का कि की कु कू के को कं

....

....

पाठ-3

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

न ना नि नी नु नू ने नो नं

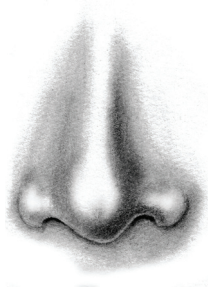

नाक

नीमू

नरा
नाड़
नियो
नीमड़ी
नुवार
नूं
नेज
नोक
नंग

"न"के साथ आने वाले संयुक्ताक्षर

न्न	चुन्नी	पन्नी
न्द	कान्दा	कन्दार
न्य	न्यारा	अन्याई
न्त	अन्त	सन्त

1. नाक मअ नूं की लागी।
2. नीमू नीमड़ी कन छ।

न ना नि नी नु नू ने नो नं

....

....

पाठ-4

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

ब बा बि बी बु बू बे बो बं

बाज

बेलड़ी

बल
बारी
बियाई
बीड़ी
बुगलो
बू
बेवड़ो
बोज
बंगड़ी

"ब" के साथ आने वाले संयुक्ताक्षर

ब्ब	कब्बो	डब्बो
ब्ज	कब्जो	लब्ज
ब्य	ब्यान	ब्याई

1. बाज उड़गो।
2. बेलड़ी टूटगी।

ब बा बि बी बु बू बे बो बं

....

....

पाठ-5

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

ग गा गि गी गु गू गे गो गं

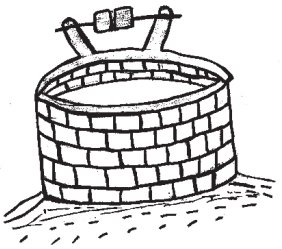

गरगड़ी

गुरगली

गजबको
गार
गियो
गीड
गुवाड़ी
गूमड़ो
गेलो
गोखो
गंज्यो

"ग" के साथ आने वाले संयुक्ताक्षर

ग्ग	जग्गो	मग्गो
ग्य	ग्यान	ग्याबण

1. गरगड़ी टूटगी।
2. गुरगली उडगी।

ग गा गि गी गु गू गे गो गं

....

....

पाठ-6

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

द दा दि दी दु दू दे दो दं

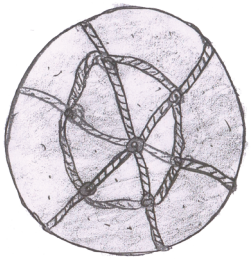

दड़ी

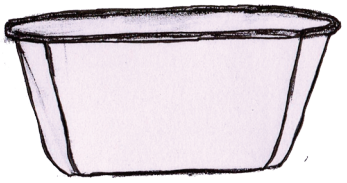

दून्दो

दरपट्टी
दारू
दियो
दींवळ
दुर
दूबळो
देळ
दोबड़ी
दंगी

"द" के साथ आने वाले संयुक्ताक्षर

द्द	गद्दो	भद्दो
द्य	कद्यां	जद्यां

1. दड़ी खेत मअ गुमगी।
2. दून्दा मअ दाळ छ।

द दा दि दी दु दू दे दो दं

....

....

पाठ-7

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

ल ला लि ली लु लू ले लो लं

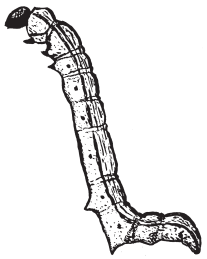

लट

लाव

लकड़ो
लाज
लिलो
लीर
लुगाई
लूम
लेबो
लोई
लंगूर

"ल" के साथ आने वाले संयुक्ताक्षर

ल्ल	गल्लो	बल्लो
ल्य	काल्यो	मोल्यो
ल्प	सुल्पी	कुल्पी
ल्ड	हूल्ड	खूल्ड
ल्ट	उल्ट	पुल्ट

1. बाजरा मअ लट लाग्गी।
2. कोठी मअ लाव टूटगी।

ल ला लि ली लु लू ले लो लं

....

....

पाठ-8

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

य या यि यी यु यू ये यो यं

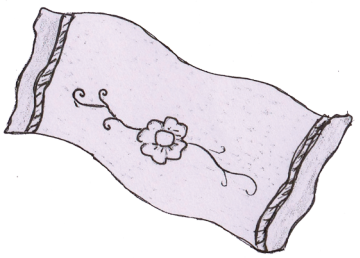

तोलियो

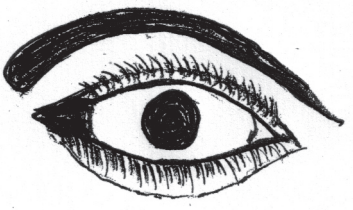

कोयो

डायजो
बायरो
यातरा
याद
बियाई
यार
बायेलो
दियो
तोर्यूं

1. तोलियो पाणी सूं भीजग्यो।
2. कोया मअ लागी।
3. कोया नअ तोलिया सूं पूंच।

य या यि यी यु यू ये यो यं

....

....

पाठ-9

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

ण णा णि णी णु णू णे णो णं

बण

धणो

कण
कणकती
दाणा
कणियां
बाणी
विस्णू
गणेस
पांवणो
काणो

"ण" के साथ आने वाले संयुक्ताक्षर

ण्ड	गण्डक	डण्डो
ण्ड	कण्ट	चण्ट
ण्य	मण्यां	जाण्यां

1. बण मअ पाणी दअ।
2. धणो पीळो कोनअ।
3. बाड़ा मअ बण अर धणो छ।

ण णा णि णी णु णू णे णो णं

....

....

पाठ-10

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी में नहीं केवल ढुँढाड़ी भाषा में ही पढ़ते हैं।

ळ ळा ळि ळी ळु ळू ळे ळो ळं

कळ

कळी

काळ
कळा
पळिंडो
बाळी
चळु
ब्याळू
कळेस
कोळळो
कळंग

"ळ" के साथ आने वाले संयुक्ताक्षर

ळळ	सोळळो	पळळो
ळय	कटोळयो	पीळयो

1. टेकटर की कळ टूटगी।
2. कळी मअ पाणी कम छ।
3. कळ पअ कळी पड़गी।

ळ ळा ळि ळी ळु ळू ळे ळो ळं

....

....

पाठ-11

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

ड़	ड़ा	ड़ि	ड़ी	ड़ु	ड़ू	ड़े	ड़ो	ड़ं

बड़

बीड़ी

जड़
बड़ा
रअड़ियो
बाड़ी
कड़ुल्या
आड़ू
चुड़ेल
पअड़ो
कड़ंग

"ड़" के साथ आने वाले संयुक्ताक्षर

ड़्य	कड़्यां	बाड़्यां

1. बड़ की जड़ बडी छ।
2. जादा बीड़ी मत पी।
3. बड़ कन बीड़ी पड़ी छ।

ड़	ड़ा	ड़ि	ड़ी	ड़ु	ड़ू	ड़े	ड़ो	ड़ं
....	....	....	....	....	....	....	....	....
....	....	....	....	....	....	....	....	....

पाठ-12

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

व वा वि वी वु वू वे वो वं

वीणा

सुवो

बावळो
वाज
वारबो
तुवार
कवि
तावड़ो
सूरवीर
पुवो
खुवो

1. वीणा नअ मत बजा।
2. सुवो साळ मअ आग्यो।
3. वीणा कन सुवो छ।

व वा वि वी वु वू वे वो वं

....

....

पाठ-13

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

अ आ ओ

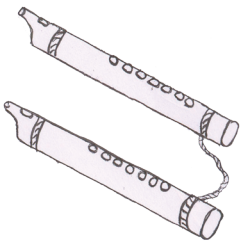

अलगोजा

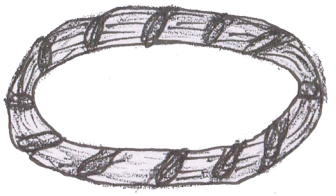

आअरी

ओक

अकल
अबार
अकबार
आग
आबो
आकरो
ओगण
ओगन्या
ओदण

1. अलगोजा बजा लअ।
2. पाता नअ आअरी पअ मेल।
3. ओक लगार पाणी पी।
4. आअरी कन अलगोजा छ।

अ आ ओ

... ...

... ...

पाठ-14

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

ई अं उ

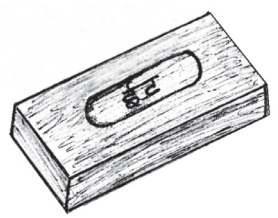

ईंट

अंगूर

उजळी

ईंकअ
ईंकन
ईंस
अंग
अंगोचो
अंगीरा
उगावो
उगळबो
उगड़बो

1. ईंस पअ ईंट पड़गी।
2. अंगूर आला हअग्या।
3. उजळी मअ ईंट हअगी।
4. अंगूर उजळी मअ पड़ग्या।

ई	अं	उ
...	...	...
...	...	...

पाठ-15

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

ए ऊ इ

एकतारो

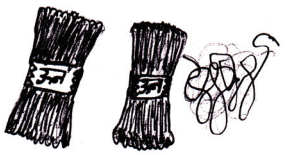

ऊन

इली

एकलो
एकोड़ी
एब
ऊद
ऊंट
ऊत
इण्डी
इमली
इतरबो

1. एकतारो लेर आजा।
2. सगळी ऊन लेर आजा।
3. कान मअ इली घुसगी।
4. ऊन मअ इली छ।

ए ऊ इ

... ...
... ...

पाठ-16

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

त ता ति ती तु तू ते तो तं

ताकड़ी

तीतर

तम्बू
ताळी
तिरायो
तीतरी
तुवो
तूमड़ी
तेल
तोलियो
तंत

"त" के साथ आने वाले संयुक्ताक्षर

त्त	पत्ता	गत्ता
त्य	बोत्यो	मोगत्यो

रामू ताकड़ी सूं तरबूज तोलर्यो छो। ताकड़ी सूं तोलती टेम तरबूज फूटग्यो। फूटेड़ा तरबूज कन तीतर आयो। ताकड़ी पअ बअठर तीतर तरबूज खाबा लागग्यो। रामू ताकड़ी कन आयो तो तीतर उडग्यो।

त ता ति ती तु तू ते तो तं

....

....

पाठ-17

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

स सा सि सी सु सू से सो सं

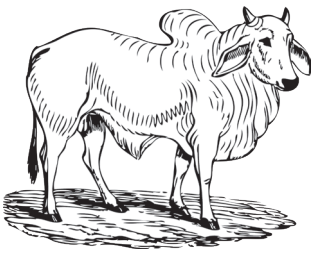

साण्ड

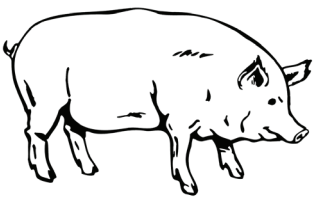

सूर

सड़क
साळ
सिरी
सींग
सुई
सूयो
सेर
सोदी
संक

"स" के साथ आने वाले संयुक्ताक्षर

स्स	सुस्सो	कस्सो
स्य	स्याळ	उस्यार
स्त	मस्त	कास्तगार

एक बार साण्ड कअ अर सूर कअ सड़क पअ लड़ाई हअगी। साण्ड सूर नअ सींगां सूं मार्रर सड़क पअ पटक दियो। सूर सड़क पअ सूं उठर सूया मअ दबग्यो। अब साण्ड सड़क पअ सूं चलग्यो।

स सा सि सी सु सू से सो सं

....

....

पाठ-18

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

ज जा जि जी जु जू जे जो जं

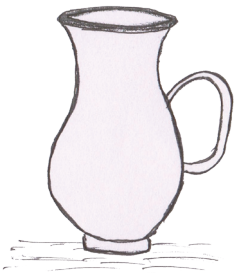

जग

जेळी

जगत
जाळ
जिद
जीरो
जुवार
जूती
जेवड़ी
जोत
जंगळ

"ज" के साथ आने वाले संयुक्ताक्षर

ज्ज	सज्जो	छज्जो
ज्य	कज्या	सज्या

एक पाळती जूत्यां पअर्रर जेळी सूं जुवार भेळी कर्यो छो। वो जेळी नअ जुवार कन मेलर जग सूं पाणी पीबा लागग्यो। अतरामईं जुवार कन एक स्यांप आग्यो। पाळती जुवार नअ जेवड़ी सूं बान्दर स्यांप नअ मार दियो।

ज जा जि जी जु जू जे जो जं

....

....

पाठ-19

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

छ छा छि छी छु छू छे छो छं

छणगो

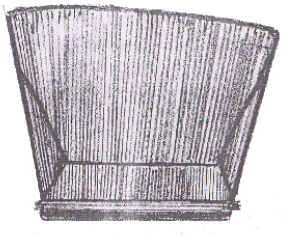

छाजळो

छपरो
छांगी
छिंपटा
छींक
छुंवारा
छूं
छेको
छोला
छंगेड़ो

"छ" के साथ आने वाले संयुक्ताक्षर

छ्य	छ्यान	छ्याळी

एक पाळती छांगी लेर खेत मअ छणगा तोड़बा चलग्यो। छांटां डटतांईं पाळती छांगी नअ छाजळा कन मेल दियो। वो खेत मअ छणगा तोड़बा लागग्यो। छांटां आतांईं छांगी नअ अर छाजळा नअ घरां लियायो अर छणगा नअ खेतमईं छोड्यायो।

छ छा छि छी छु छू छे छो छं

....

....

पाठ-20

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

ट टा टि टी टु टू टे टो टं

टमेटर

टिटोड़ी

टकबो
टांट
टिपन
टीलो
टुंट्यो
टूटी
टेक
टोकरी
टंकारो

"ट" के साथ आने वाले संयुक्ताक्षर

ट्ट	पट्टी	गट्टी
ट्ठ	पट्ठी	लट्ठ
ट्य	टांट्या	साट्या

एक दन एक टिटोड़ी टमेटरां का खेत मअ चलगी। ऊं खेत को धणी टमेटरां नअ टूंटी सूं पाणी पावअ छो। टिटोड़ी टूंटी पअ बअठर टमाटर खाबा लाग्गी। पाळती खेत मअ आतांईं टिटोड़ी उडगी।

ट टा टि टी टु टू टे टो टं

....

....

पाठ-21

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

प पा पि पी पु पू पे पो पं

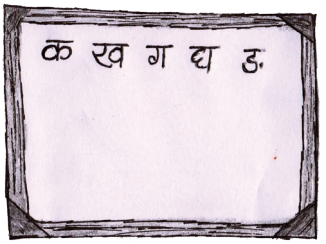

पाटी

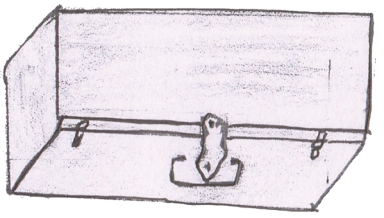

पेई

पग
पाडो
पिन
पीपो
पुचकारबो
पूड़ी
पेट
पोट
पंच

"प" के साथ आने वाले संयुक्ताक्षर

प्प	गप्पी	कुप्पी
प्य	प्याली	टोप्यां

रामू पडबा बेई पेई मअ सूं पाटी नकाळर्यो छो। पाटी नकाळती टेम ऊंकी पीण्डी मअ पाटी की लागी। वो पाटी नअ पेई मअ मेल दियो। वो पीण्डी कअ पट्टी बांद लियो। पट्टी बांदबा सूं पीण्डी निकां हअगी। अब वो रोजिना स्याम की पाटी लेर पडअ छो।

प पा पि पी पु पू पे पो पं

....

....

पाठ-22

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

म मा मि मी मु मू मे मो मं

मजीरा

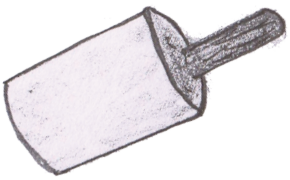

मोगरी

मण
मायरो
मिस्तरी
मींगणी
मुरकी
मून्दड़ी
मेर
मोगड़ो
मंगरी

"म" के साथ आने वाले संयुक्ताक्षर

म्म	मम्मी	
म्ब	खम्बो	लम्बो
म्ह	म्हारो	खुम्हार
म्प	पम्प	रम्प
म्य	म्यान	म्याऊं

एक बार एक छोरो मजीरा सूं खेलर्यो छो। वो खेलतो-खेलतो मोगरी सूं मजीरा नअ फोड़ दियो। वो मोगरी अर मजीरा नअ घरां लेग्यो। फूटेड़ा मजीरा नअ ऊंको दादो देख लियो। वो ऊं छोरा नअ खियो मूरख मोगरी सूं मजीरा नअ क्यूं फोड़ दियो?

म मा मि मी मु मू मे मो मं

....

....

पाठ-23

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

ड डा डि डी डु डू डे डो डं

डकाव

डगळ

डब्बो
डाकण
बडिया
डील
डुलबो
डूंगर
डेकची
डोकरी
डंक

"ड" के साथ आने वाले संयुक्ताक्षर

ड्य	डुंड्यो	बांड्यो

एक पाळती खेत मअ हळ काडर्यो छो। ऊं खेत मअ एक डकाव छो। डकाव कन खेत मअ नरा मोटा डगळ छा। पाळती सारा मोटा-मोटा डगळा नअ डकाव पअ लगा दियो। दूसरअ दन बरखां आगी, अर डगळा नअ डकाव पअ लगाबा सूं खेत मअ पाणी भरग्यो। पाणी सूं ऊंका खेत की डोळी फूटगी। वो डगळा नअ हटा दियो। जिसूं खेत को पाणी नकळग्यो अर पाळती घरां आग्यो।

ड डा डि डी डु डू डे डो डं

....

....

पाठ-24

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

च चा चि ची चु चू चे चो चं

चरी

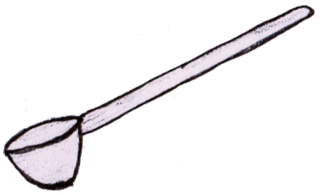

चाटू

चड़ी
चाकलो
चिट्टी
चीलड़ो
चुचकी
चूमळी
चेड़ो
चोकट
चंगा

"च" के साथ आने वाले संयुक्ताक्षर

च्च	कच्चो	कच्चर
च्य	बच्या	च्यार

एक बार मीरा कोठी पअ पाणी की चरी भरबा जारी छी। जाती टेम ऊंकी चूमळी गेला मअ पड़गी। वा चरी भर्रर लियाई। घरां जार वा साग रांदबा लाग्गी। साग उफणतांई वा चाटू सूं टोळबा लाग्गी। टोळती टेम चाटू टूटग्यो। वा साग नअ चूला पअ सूं उतार दी अर चीलड़ा बणार खाई।

च चा चि ची चु चू चे चो चं

....

....

पाठ-25

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

ख खा खि खी खु खू खे खो खं

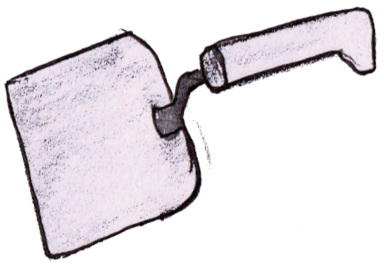

खरपो

खरबूजो

खरूंट
खाट
खियो
खीर
खुज्यो
खूंटो
खेळ
खोटो
खंजरी

"ख" के साथ आने वाले संयुक्ताक्षर

ख्य	ख्याल	आंख्यां

एक बार एक पाळती खेत मअ खरबूजा बाअ मेल्यो छो। पाळती खेत मअ खरबूजा तोड़बा चलग्यो। खरबूजा तोड़ती टेम ऊंको खरपो गुमग्यो। वो खरबूजा का खेत मअ खरपा नअ घणो हेर्यो। पण वो कोन लाद्यो। वो ऊंको पाच्यो छोडर खरबूजा तोड़बा लागग्यो। खरबूजा तोड़ती टेम ऊंनअ खरपो लाद्यायो। फेर वो खरपो अर खरबूजा लेर घरां चलग्यो।

ख खा खि खी खु खू खे खो खं

....

....

पाठ-26

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

ह हा हि ही हु हू हे हो हं

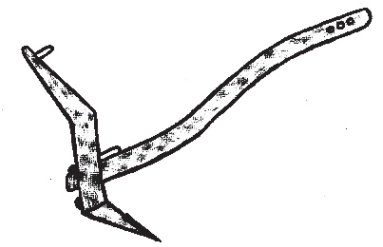

हळ

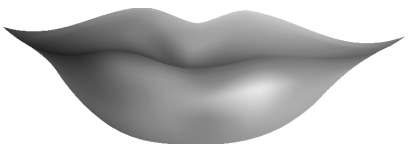

होट

हळद
हाड
हिन्दो
हींग
हुड़दंग
हूकबो
हेल
होळा
हंगबो

एक पाळती खेत मअ हळ काडर्यो छो। हळ काडती टेम वो हळ पअ पड़गो। जिसूं ऊंका होट पअ हळ की लागी। ऊंका होट पअ हळ की लागबा सूं होट पअ लोई आग्या। वो हळ नअ दूरां मेलर होट पअ हळद लगा लियो। हळद लगाबा सूं ऊंको होट निकां हअग्यो। वो खेत नअ पूरो बाअर घरां आग्यो।

ह हा हि ही हु हू हे हो हं

....

....

पाठ-27

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

भ भा भि भी भु भू भे भो भं

भालो

भाटो

भट्टी
भाण्ड
भिण्डी
भील
भुखारी
भूडो
भेळी
भोळो
भंडारो

एक भाण्ड भाला सूं स्यांप मार्यो छो। स्यांप मारती टेम भालो भाटा सूं टूटग्यो। भाण्ड भाटा नअ दूर भगा दियो अर भाला नअ लुवार्या कन पुवाबा लेग्यो। वो लुवार्या नअ भालो पुवाबा का पचास रफ्या दे दियो। वो भालो लेर घरां आग्यो अर ऊंकअ भाटा सूं धार देर घर मअ मेल दियो।

भ भा भि भी भु भू भे भो भं

....

....

पाठ-28

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

थ था थि थी थु थू थे थो थं

थाळी

थापड़ी

थड़ो
थापो
थापड़ी
थुई
थूंकबो
थूली
थेलो
थोगली
थोड़ी

रामू थाळी मअ पुजापो घालर थड़ा पअ भोक लगाबा चलग्यो। थड़ा पअ भोक देबा जाती टेम वो थापड़ी लेजाबो भूलग्यो। थाळी नअ थड़ा पअ मेल दियो अर घरां थापड़ी लेबा चलग्यो। पाछअ सूं गण्डकड़ो थाळी का पुजापा नअ खाग्यो। रामू पाछो थड़ा पअ गियो तो ऊंनअ थाळी कोन लादी। वो थड़ा कअ च्यारूंमेर देख्यो तो थाळी थड़ा कअ पाछअ पड़ी छी। वो बना भोक दियांईं घरां आग्यो। ऊंनअ ईं बात सूं सारा घरका लड़्या।

थ था थि थी थु थू थे थो थं

....

....

पाठ-29

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

घ घा घि घी घु घू घे घो घं

घागरो

घूगरा

घड़गी
घाणी
घींसोड़ी
घी
घुसबो
घूंट
घेरो
घोळ
घंटाघर

"घ" के साथ आने वाले संयुक्ताक्षर

घ्य	घ्यारी	

एक लुगाई सअर मअ घागरो अर घूगरा लेबा चलगी। वा सअर मअ सूं घागरो अर घूगरा लेली। घागरा नअ लत्ता सींबाळा कन पटक्याई अर घूगरा नअ घरां लियाई। वा दूसरअ दन सअर मअ जार घागरो लियाई। घागरा नअ पअरली अर लूगड़ी को घूंगटो काडली। वा ऊंका पगां मअ घूगरा बान्दर नाचरी छी। नाचती टेम घागरा की लावण पगां मअ उळजगी जिसूं वा पड़गी। ऊंको घागरो फाटग्यो। ऊंका घूगरा टूटग्या जिसूं वा घणी दुखी ही।

घ घा घि घी घु घू घे घो घं

....

....

पाठ-30

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

फ फा फि फी फु फू फे फो फं

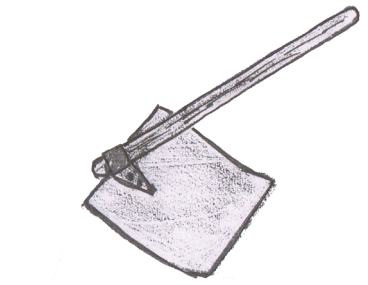

फावड़ी

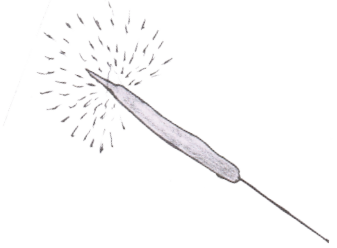

फूलचड़ी

फळ
फाळ्यो
फियो
फीको
फुर्तिलो
फूंकणी
फेरा
फोरो
फंदो

"फ" के साथ आने वाले संयुक्ताक्षर

फ्य	बाफ्यो	गोफ्यो

एक पाळती फावड़ी सूं पाणत कर्यो छो। फावड़ी सूं पाणत करती टेम ऊंनअ फूलचड़ी लाद्याई। वो फावड़ी नअ खेत मअ मेल दियो अर फूलचड़ी नअ छुडाबा लागग्यो। फूलचड़ी सूं ऊंको फांटो बळग्यो। वो फूलचड़ी नअ दूर भगा दियो अर फांटा नअ पाणी सूं बजाबा लागग्यो। ईं सगळा चक्कर मअ वो फावड़ी नअ खेतमईं भुल्यायो अर घरां आग्यो।

फ फा फि फी फु फू फे फो फं

....

....

पाठ-31

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

ध धा धि धी धु धू धे धो धं

धणो

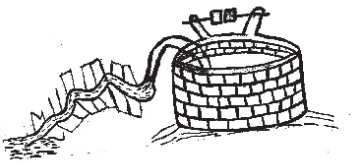

धोरो

धअण
धांसा
धिकारबो
धीणो
धुरो
धूळ
धोखो
धोकती
धन्दो

"ध" के साथ आने वाले संयुक्ताक्षर

ध्य	ध्यान	

एक पाळती खेत मअ धणो बाअ दियो। वो धणा नअ धोरा सूं पाणी पावअ छो। धोरा मअ धांसा उळजबा सूं धोरो फूटग्यो। धोरो फूटबा सूं सगळो पाणी गेलामईं नकळग्यो। धोरा को पाणी धणा मअ न जाबा सूं धणो सूकबा लागग्यो। जिसूं पाळती घणो दुखी हियो। वो धोरा नअ मूंजर पाछअ सारा धणा नअ पाणी पायो। पाणी पाबा सू ऊंको सारो धणो हर्यो हअग्यो। वो पाणी पार घरां आग्यो।

ध धा धि धी धु धू धे धो धं

....

....

पाठ-32

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

ठ ठा ठि ठी ठु ठू ठे ठो ठं

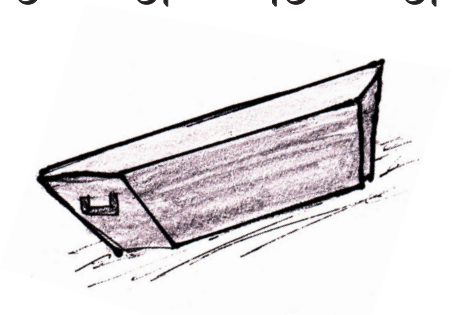

ठाण

ठटेरो

ठकोरो
ठाटो
ठीकरी
ठीणबो
ठुमको
ठूंसबो
ठेकलो
ठोर
ठंड

एक ठटेरो ठाण कन बअठर डेकची बणार्यो छो। ठाण कअ तळअ एक स्यांप छो। ठटेरा नअ स्यांप को ठीक पड़ग्यो। ठटेरो ठाण नअ दूरां कर दियो। ठाण नअ दूरां करबा सूं स्यांप भागबा लागग्यो। ठटेरो स्यांप कअ पाछअ भाग्यो तो स्यांप बल मअ घुसग्यो। ठटेरो ठाण कन बअठर डेकची बणा दियो। अब वो डेकची नअ सअर मअ बेचबा चलग्यो। डेकची का पीसा सूं वो सारा घरका बेई साग अर मठाई लेर आयो। सारा घरका मजा सूं खार सोग्या।

ठ ठा ठि ठी ठु ठू ठे ठो ठं

....

....

पाठ-33

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

झ झा झि झी झु झू झे झो झं

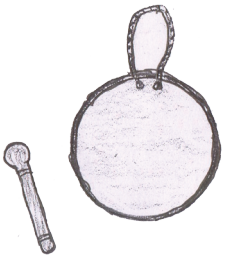

झालर

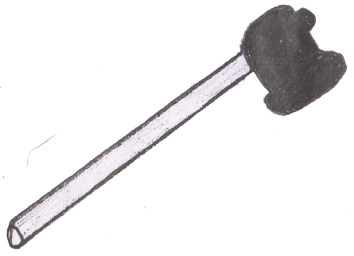

झूमरो

झगड़ो
झाड़
झिकजिक
झीणो
झुंजळाट
झूमको
झेरो
झोटी
झंजट

एक आदमी झूमरा सूं नतकई भाटा फोड़अ छो। वो झूमरा नअ घर मअ मेलती टेम झालर कअ माळअ पटक दियो। जिसूं झालर टूटगी। वो झूमरा नअ छाजा पअ मेल दियो अर झालर नअ सअर मअ लेग्यो। झालर नअ सअर मअ सई करा ल्यायो। वो झूमरा सूं भाटा फोड़र नरी कमाई कर्यो। ऊं कमाई सूं एक चोखो घर बणायो। अब वअ सारा घरका ऊं घर मअ मजा सूं रअबा लागग्या।

झ झा झि झी झु झू झे झो झं

....

....

पाठ-34

नीचे दिये गये अक्षरों को हिन्दी और ढुँढाड़ी में एक जैसे ही पढ़ते हैं।

ढ ढा ढि ढी ढु ढू ढे ढो ढं

ढकणो

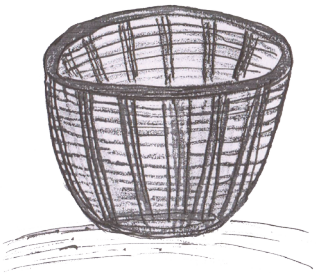

ढोकलो

ढळबो
ढाणो
ढिया
ढीबरो
ढुळबो
ढूमल्यो
ढेबो
ढोल
ढंग

एक लुगाई साग बणारी छी। ऊंनअ डेकची ढकबा बेई ढकणो न लाद्यो। ढकणा नअ हेरती-हेरती वा लुगाई भुखारी मअ चलगी। वा ढकणा नअ तो भूलगी अर ढोकलो उठार डाण्डा नअ चारो पटकबा चलगी। ढोकला मअ खाकलो भरती टेम ऊंनअ वो ढकणो बसेरा मअ ईं लाद्यायो। वा ढोकला सूं खाकलो पटक अर ढकणो लेर चलगी। ढकणा सूं डेकची नअ ढक दी अर चून ओसणबा लाग्गी।

ढ ढा ढि ढी ढु ढू ढे ढो ढं

....

....

ढुँढाड़ी भाषा की कहानियाँ

1.एक चड़ो अर एक चड़ी

एक बार एक चड़ो अर एक चड़ी छा। एक दन दोनी बतळाया कअ आपां खीचड़ी बणावां। चड़ो लियायो चावळ अर चड़ी लियाई मूंग। दोनी खीचड़ी बणा लिया। चड़ी पाणी लेबअ चलगी अर चड़ो पाछअ सूं सगळी खीचड़ी नअ खाग्यो। थोड़ी बार पाछअ चड़ी पाणी लेर आई। चड़ी, चड़ा नअ बोली कअ खीचड़ी नअ कुण खाग्यो।

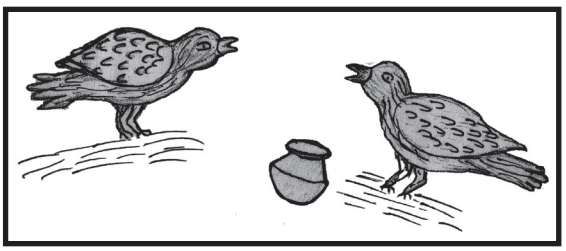

चड़ो बोल्यो कअ म्ह तो कोन खायो। ईं बात नअ लेर दोन्या कअ राड़ हअगी। दोनी एक कोठी पअ चलग्या अर एक कच्चा सूत का तागा को हिन्दो घाल लिया। पअली चड़ी हिन्दो खार बारअ आगी। चड़ो हिन्दो खाबअ लाग्योर हिन्दो टूटगो अर चड़ो कोठी मअ पड़ग्यो। चड़ी कोठी पअ बअठी-बअठी रोबा लाग्गी। थोड़ी बार पाछअ उण्डअ एक बलाई आई अर चड़ी नअ पूछी कअ मांवसी-मांवसी कांईं हअग्यो। चड़ी बोली कअ बेटा थारो मांवसो कोठी मअ पड़ग्यो। बलाई बोली कअ कोठी मअ सूं तो म्ह नकाळर लियाऊंली पण खाऊंली म्हईं। बलाई चड़ा नअ कोठी मअ सूं नकाळर लियाई। थोड़ी बार पाछअ चड़ो अर चड़ी उडर चलग्या अर बलाई झांकती ई रअगी।

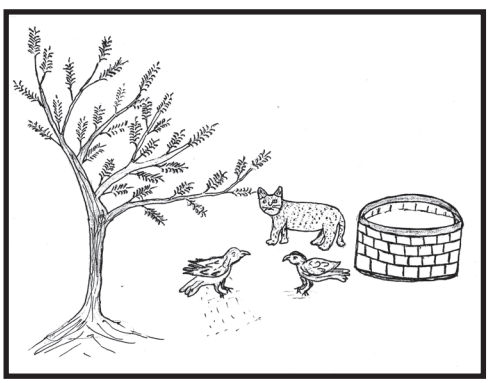

सीख :- कद्यां भी बअरी पअ बसास न करणो चाईजे।

2.काम सूं मिठो फळ मलअ छ

एक बार राजा का दरबार मअ हीरा-पन्ना बेचबाळा तीन आदमी आर्या छा। राजा नअ तीनूं आदमी हात जोड़र बोल्या कअ राजाजी म्हे तीनूं थांकी नंगरी मअ हीरा-पन्ना बेचबअ आर्या छा, गेला मअ डाकू मार-पीटर सगळा हीरा-पन्ना नअ कुसका लिया, जिसूं म्हांकन रोटी खाबा बेई भी पीसा कोनअ। राजो तीना नअ एक-एक बोरी नाज की दे दियो। राजो वां बोर्यां मअ एक-एक हीरा का नग धर दियो। वांनअ राजो बोल्यो कअ ईं नाज नअ थे खुद ई सळियो करज्यो।

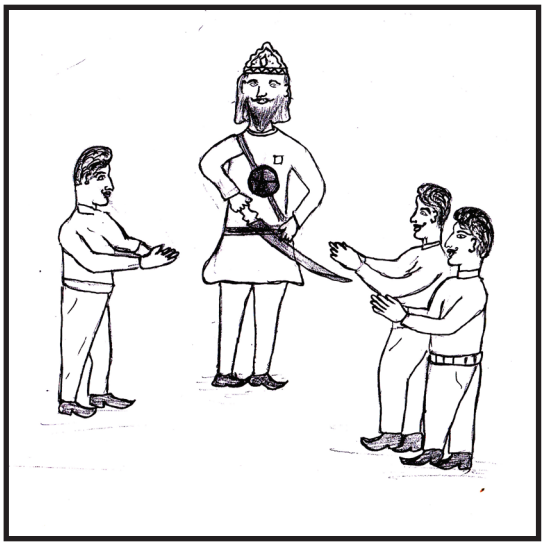

तीना मअ सूं दो आदमी तो काम चोर छा, जे व तो नाज की बोर्या नअ सळियो करबा बेई चून पीसबाळा नअ दे दिया। एक आदमी घणो काम करबाळो छो, जे वो तो ऊंकी बोरी नअ खुद ई सळियो कर्यो। ऊं बोरी मअ सूं एक हीरो नकळयो छो। जे घणो मंअगो छो। ऊं आदमी नअ मेनत करबा को फळ मलग्यो।

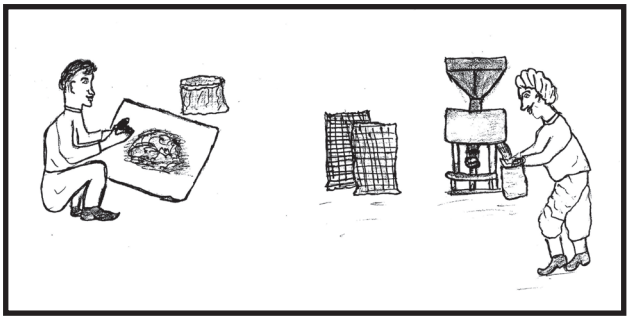

सीख :- खरा काम का खरा दाम।

3.भगवान छप्पर फाड़र दे छ

एक बार एक आदमी छो। वो नतकई कमाबा जावअ छो। एक दन वो बच्यार लगायो कअ भगवान चूंच दे छ। जिनअ चुगो भी दे छ। वो जिद कर लियो

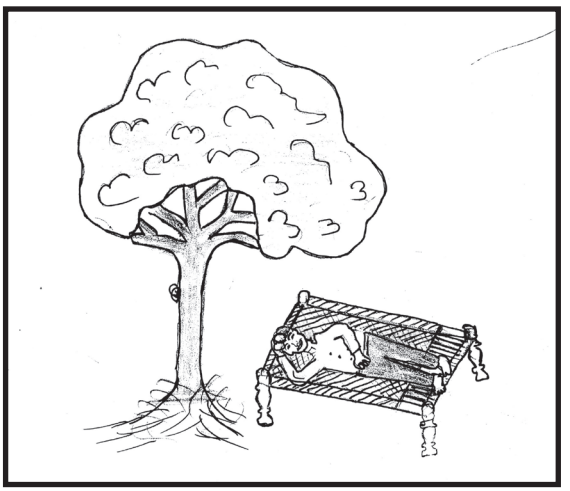

अर कमाबा जाबो बन्द कर दियो। ऊंनअ गांव का सबळा आदमी खिया कअ कमाबा जा भगवान तो बअठ्या-बअठ्या नअ कोन दे। वो आदमी खियो कअ म्हारा कमाबा सूं कांई हअलो भगवान तो जिनअ दे छ, जिनअ छप्पर फाड़र ई दे छ। एक दन वो आदमी सुंवांरई नमटब चलग्यो अर वो नमटब बअठ्यो जद एक टींटको लेर जमी कुदेर्यो छो, तो ऊंनअ एक सोना को लोठ्यो लाद्यायो वो ऊंनअ लेर घरां आग्यो अर मन मअ घणो राजी हियो। वो बच्यार लगायो कअ आपां नअ तो भगवान छप्पर फाड़र दे दियो।

सीख :- नसीब का लेख कोन टळअ।

4.दोनी जणा की राड़

एक गांव मअ दोनी जणा रअ छा। मोट्यार को नांव रामू अर लुगाई को नांव रमा छो। रामू सबाऊ सूं लड़ोकड़ो छो। वो नतकई रमा सूं राड़ करअ छो।

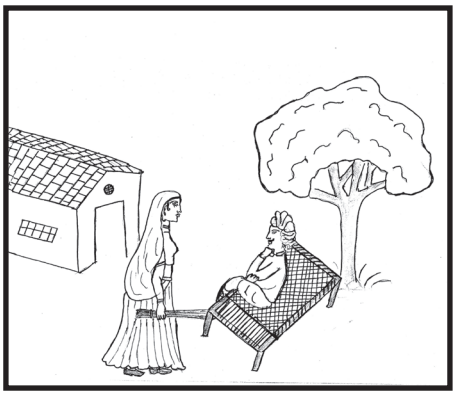

रमा ऊंसूं घाडी खुराब हअगी। ऊं गांव मअ एक बाबोजी रअ छो। जद भी वो रमा सूं राड़ करअ छो तो रमा ऊंनअ कांई भी खअछी, तो वो बाबोजी बणबा की धमकी दे छो। एक दन रमा बाबाजी कन जार रामू की सबळी बातां बता दी। बाबोजी बोल्यो कअ अब रामू राड़ करअ जद बाबाजी बणबा बेई खअ तो तू खअ दीज्यो "कअ बणजावो" दूसरअ दन रमा सूं राड़ कर लियो तो रमा ऊंनअ लखणा सूं रअबा बेई खी तो वो बाबोजी बणबा की धमकी दियो, तो रमा बोली, कअ बणजावो। रामू दूसरअ दन बाबाजी कन चलग्यो। बाबाजी ऊंनअ एक जोळी देर गांव मअ मांगबअ खन्दा दियो। रामू गांव मअ मांगतो-मांगतो घाडो खुराब हअग्यो अर ऊंनअ रमा की बातां याद आयी। वो जोळी नअ भगा दियो अर रमा कन आग्यो। पाछअ दोनी जणा सुक सूं जीवन बिताया।

सीख:- आगलअ घर गियां पाछलो घर याद आवअ छ।

5.गेला मअ पटक्यायो

एक बार मदन नांव को आदमी छो। ऊंको बाप बेमार छो अर एक दन वो मरग्यो। मदन को बायेलो रामू छो। वो रामू नअ खियो कअ मन तो बारा

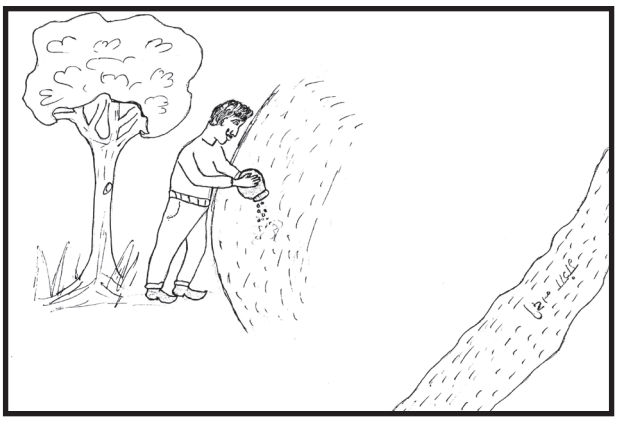

दन तक सराव कोनअ अर तू म्हारा बाप नअ गंगाजी मअ पटक्या। मदन, रामू नअ करायो भाड़ो देर गंगाजी खन्दा दियो। रामू गंगाजी तो गियो कोनअ अर मदन का बाप नअ गेला मईं पटकर आग्यो। मदन बच्यार लगायो कअ गंगाजी जार आबा मअ तो नरा दन लागअ छ अर यो तो बेगोई घरां आग्यो। एक दन मदन रामू नअ खियो कअ मन रात मअ सपनो आयो अर सपना मअ म्हारो बाप आयो। वो खियो, तू कस्या आदमी नअ गंगाजी खन्दायो छो। वो तो मन गेला मईं पटकर आग्यो। रामू बोल्यो बात तो सई छ। पण थारा बाप नअ तो मर्यां पाछअ भी अकल न आई। वो अतरो अण्डी आयो जतरो उण्डी जातो तो गंगाजी मअ चलजातो।

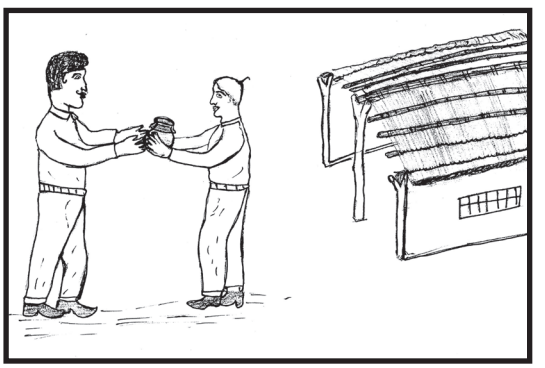

सीख:- खुद को काम दूसरां पअ नअ छोड़णो चाईजे।

आपके विचार

आपके पास ढुँढाड़ी या अन्य किसी भी भाषा का साहित्य संग्रह हो (जैसे कहानियाँ, कहावतें, चुटकले, मुहावरे, जीवनी, इतिहास, नाटक, भजन, कवितायें, पौराणिक कथा, लोकगीत, पहेलियाँ, इत्यादि) तो, हम उसको आपके नाम व फोटो के साथ प्रकाशित करेगें जिससे अपनी भाषा को बढ़ावा मिलेगा व आपका नाम भी रोशन होगा।

अत: आपसे अनुरोध है कि इस कार्य को बढ़ावा देने में हमारी मदद करें। आपका आगमन एवं लेख हमेशा स्वागत योग्य है।